ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 16 अंक 31 कुल पृष्ठ-8 22 से 28 जुलाई, 2021 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853122 सम्वत् 2078 आ.शु.-13

इतिहास के पाठ्यक्रमों से अनुचित तथ्य हटाकर वास्तविक तथ्यों को करें सम्मिलित – स्वामी आर्यवेश

भारतीय इतिहास के पाठ्यक्रम में संशोधन हेतु गठित समिति को भेजे गये वांछित सुझाव

देश के स्कूल, कॉलेज व विश्वविद्यालयों में पढ़ाये जा रहे इतिहास के पाठ्यक्रम में संशोधन करने हेतु गठित समिति के समक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने इतिहास में पढ़ाई जा रही कुछ गलत तथा भ्रान्त बातों की तरफ ध्यान आकर्षित कराया है। पढ़ाये जा रहे इतिहास में वास्तविक तथ्यों की अनदेखी की जा रही है। उदाहरण स्वरूप स्वतन्त्रता आन्दोलन में आर्य समाज द्वारा किये गये महत्त्वपूर्ण योगदान की उपेक्षा की गई है। इसी तरह और भी अनेक बिन्दु हैं जिन पर उपराष्ट्रपति और सभापति राज्यसभा श्री वेंकय्या नायडू जी को पत्र लिखकर सुधारों की अपेक्षा की गई है। यह पत्र अविकल रूप से यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है।

सेवा में,

आदरणीय श्री वेंकय्या नायडू जी

उपराष्ट्रपति एवं सभापति, राज्यसभा

संसद भवन, नई दिल्ली-1

विषय : राज्यसभा द्वारा भारतीय इतिहास के पाठ्यक्रम में संशोधन से सम्बन्धित जो समिति गठित की गई है उसके समक्ष वांछित सुझाव।

माननीय महोदय,

सादर नमस्ते!

निवेदन है कि भारतीय इतिहास में संशोधन करने हेतु गठित समिति द्वारा गत दिनों देशभर के छात्रों, शिक्षकों एवं प्रबुद्धजनों से सुझाव मांगे गये थे कि अभी तक देश के विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में छात्रों को जो भारतीय इतिहास पढ़ाया जा रहा हैं उसमें किस प्रकार के सुधारों की आवश्यकता है -

इस संदर्भ में आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से कुछ महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर सुझाव प्रेषित किये जा रहे हैं। आशा है समिति इन सुझावों पर गम्भीरता से विचार करेगी।

वर्तमान में भारतीय इतिहास के पाठ्यक्रम में छात्रों को जो पाठन सामग्री पढ़ाई जा रही है। उसमें भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन में आर्य समाज संगठन से प्रभावित क्रांतिकारियों की भूमिका को नजरअंदाज किया गया है। जबकि स्वामी विरजानन्द जी से लेकर महर्षि दयानन्द सरस्वती, श्यामजी कृष्ण वर्मा, स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपत राय, शहीदे आजम भगत सिंह, राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्लाखाँ, यशपाल, सुखदेव, राजेन्द्र सिंह लाहिड़ी, भाई परमानन्द, भाई बाल मुकुन्द(जिन्होंने लार्ड हार्डिंग पर बम फेंका था) बाल मुकुन्द जी की धर्मपत्नी श्रीमती रामरखी देवी, रामप्रसाद बिस्मिल की बहन शास्त्री देवी, दुर्गा भाभी आदि नाम प्रमुख हैं। जिन्होंने आर्य समाज द्वारा भारत की स्वतंत्रता के लिए प्रारम्भ किये गये अभियान से प्रभावित होकर भारत की आजादी के लिए अपना बलिदान दिया। यह भी ऐतिहासिक साक्ष्य है कि सरदार भगत सिंह, सांडर्स हत्या के पश्चात् दो महीने तक आर्य समाज विधानसरणी, कलकत्ता में रहे और उनका पूरा परिवार आर्य समाज से जुड़ा हुआ था। उनके दादा सरदार अर्जुन सिंह जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती से यज्ञोपवीत लेकर आर्य समाज की दीक्षा ली थी। अंग्रेजों से छिपकर गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) में भी उपरोक्त क्रांतिकारी ठहरने के लिए जाते थे। इस गुरुकुल की प्रबन्ध व्यवस्था प्रारम्भ से ही आर्य समाज संगठन द्वारा की जाती रही है। श्यामजी कृष्ण वर्मा जो कि संस्कृत के विद्वान् थे, उन्हें भी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने लन्दन भेजा था। वहाँ पर उन्होंने 'इंडिया हाऊस' की स्थापना की थी। इसी 'इंडिया हाऊस' लन्दन में भारत की आजादी के लिए योजना बनाई जाती थी। लाला हरदयाल ने श्यामजी कृष्ण वर्मा की प्रेरणा से 'गदर पार्टी' का निर्माण किया था। आजाद हिन्द फौज का कार्यालय थाईलैण्ड की राजधानी 'आर्य समाज बैंकाक' में रहा। जहाँ से नेताजी सुभाष चन्द्र बोस और रास बिहारी बोस आजादी का आन्दोलन चलाते थे। हैदराबाद के निजाम के विरुद्ध आर्य समाज के ही सत्याग्रहियों ने आन्दोलन चलाया और श्री नारायण राव पंवार एवं श्री गंगाराम आदि क्रांतिकारियों ने निजाम की गाड़ी पर बम तक फेंका था जिसके बदले उन्हें मौत की सजा सुनाई गई। बाद में भारत के गृहमंत्री सरदार पटेल ने उन्हें बहुत बड़ी जनसभा में मृत्यु दण्ड से मुक्त किया था। यहाँ पर यह भी बताना उपयुक्त है कि आर्य समाज के प्रचण्ड आन्दोलन के कारण ही निजाम को भारत सरकार के समक्ष घुटने टेकने पड़े थे और हैदराबाद रियासत मुक्त हुई थी। बाद में सरकार द्वारा निजाम के विरुद्ध आन्दोलन में भाग लेने वाले चार हजार आर्य समाजी सत्याग्रहियों को ताम्र पत्र देकर सम्मानित किया गया और उन्हें स्वतन्त्रता सेनानी मानकर भारत सरकार की ओर से सम्मान पेंशन प्रदान करने की व्यवस्था की गई थी। भारतीय इतिहास की पुस्तकों में आर्य समाज की इन भूमिकाओं को नजरअंदाज किया जाता है जिस कारण युवा पीढ़ी इन जानकारियों से अनभिज्ञ है।

इसके अतिरिक्त इतिहास के अनुचित एवं उचित तथ्यों के रूप में अन्य सुझाव भी निम्न प्रकार हैं :-

अनुचित तथ्य

1. स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालयों में पढ़ाये जा रहे इतिहास के पाठ्यक्रमों में विदेशी आक्रांताओं एवं अन्य अनपेक्षित लोगों का महिमा मंडन किया जाता है। जैसे अकबर महान, शाहजहां का गुणगान, अंग्रेजों की विविध विषयों में प्रशंसा और उन्हें अपने देश के महापुरुषों से अधिक बुद्धिमान, गुणवान व वैज्ञानिक बताया जाता है। इससे हमारे देश के युवाओं को क्या प्रेरणा मिलेगी। इसलिए इतिहास में सही और तथ्यपूर्ण जानकारियाँ होनी आवश्यक हैं।

वास्तविक तथ्य

1. भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में आर्य समाज की ऐतिहासिक भूमिका रही है। इस सम्बन्ध में देश के जाने-माने इतिहासकार डॉ. राम बिलास ने अपनी पुस्तक में 1857 की क्रांति में स्वामी दयानन्द जी के गुरु स्वामी विरजानन्द दण्डी के महत्त्वपूर्ण योगदान पर जी भर कर लिखा है।

आर्य समाज ने किया सर्वप्रथम स्वाधीनता का उद्घोष

सन् 1857 का प्रथम स्वाधीनता आन्दोलन अंग्रेजों ने बहुत ही क्रूरता से कुचल दिया था तथा भारत का शासन ईस्ट इंडिया कम्पनी से ब्रिटिश सरकार ने अपने अधिकार में ले लिया था। दो लाख साठ हजार भारतीय सैनिकों की संख्या कम करके एक लाख बीस हजार कर दी गई थी तथा अंग्रेज सैनिकों की संख्या बढ़ा दी गई थी। भारतीय जनता में सरकार के विरुद्ध विद्रोह दुबारा न उठे इसके लिए नवम्बर, 1858 में प्रयाग से विक्टोरिया के नाम से अपील निकली कि हमारी अंग्रेज सरकार भारत की खुशहाली और उन्नति चाहती है। हमारी सरकार तथा कोई भी राज्य कर्मचारी आप (भारतवासियों) के ऊपर ईसाई धर्म नहीं थोपेगा। यदि किसी ने ऐसा किया तो उसे कठोर दण्ड दिया जायेगा। आप सभी भारतवासी भारत की उन्नति के लिए अंग्रेज सरकार का सहयोग करें। भारतीय जनता अंग्रेज सरकार की इस घोषणा को अच्छा मान रही थी। अंग्रेजों की इस कुटिल चाल को किसी ने नहीं समझा। किन्तु दूरद्रष्टा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने इस पर करारा प्रहार करते हुए सिंह गर्जना की कि कोई कितना ही करे, स्वदेशी राज्य सर्वोपरि होता है। स्वराज्य, स्वाधीनता या स्वतंत्रता का उद्घोष सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द जी ने किया जिसे आज के तथाकथित राजनेता न कहकर कृतघ्नता का पाप कर रहे हैं।

कांग्रेस की स्थापना सन् 1885 में हुई थी जबकि इससे 10 वर्ष पूर्व सन् 1875 में आर्य समाज की स्थापना हो गई थी। आर्य समाजों में स्वदेशी (खादी) के वस्त्रों को पहनना, स्वदेशी वस्तुओं (देसी खांड़) का उपयोग करना। इसकी व्यवस्था हेतु

शेष पृष्ठ 2 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

पिछले पृष्ठ का शेष

भारतीय इतिहास के पाठ्यक्रम में संशोधन हेतु गठित समिति को भेजे गये वांछित सुझाव

आर्य समाज में दुकान खोलना, आर्यों के चक्रवर्ती राज्य की वेदमंत्रों द्वारा प्रार्थना करना। आर्य समाज के सत्संग का आवश्यक अंग था। सन् 1882 में पंजाब में हण्टर कमीशन के समक्ष आर्य समाज ने कोर्ट व कचहरी में हिन्दी भाषा के प्रयोग की माँग रखी। लाला लाजपत राय ने इसके लिए हिसार में आन्दोलन चलाया और गिरफ्तारी दी। जिसकी चर्चा आज के राजनेता नहीं करते हैं।

देश की आजादी के लिए श्यामजी कृष्ण वर्मा (आर्य समाज मुम्बई के सदस्य) ने क्रांतिकारियों एवं देशभक्तों के आवास हेतु लन्दन में एक भवन खरीदा जिसका नाम उन्होंने 'इण्डिया हाऊस' रखा था। जहाँ पर दादाभाई नौरोजी, भाई परमानन्द, वीर सावरकर, लाला हरदयाल आदि अनेक क्रांतिकारी और स्वतंत्रता सेनानी ठहरते थे। प्रत्येक रविवार को साप्ताहिक सत्संग होता था। एक रविवारीय सत्संग में दादा भाई नौरोजी के हस्ताक्षर भी हैं। इतिहास में इण्डिया हाऊस का उल्लेख तो किया जाता है, परन्तु इसे किसने बनाया, कौन व्यक्ति इसको संभालते थे और आर्य समाज से इसका क्या सम्बन्ध था आदि नहीं बताया जाता है कि कहीं यह यश आर्य समाज को न मिल जाये।

लाला लाजपत राय कांग्रेस के प्रारम्भिक काल के सदस्य रहे हैं जो आर्य समाज को माँ और ऋषि दयानन्द को पिता कहते थे। उनके पिता लाला राधाकिशन तो मुसलमान होने के लिए मस्ज़िद में जा रहे थे, परन्तु उनकी पत्नी अर्थात् लाला लाजपत राय की माँ ने पीछे से कुर्ता खींचा, माता जी की गोद में (लाजपत) बच्चा था, हाथ से खींचने के कारण वह जोर से रोने लगा। राधाकिशन का दिल हिल गया और वे मस्ज़िद की सीढ़ियों के नीचे उतर आये। इस घटना से प्रेरित होकर माँ ने बड़े प्यार से बालक का नाम लाजपत रखा, क्योंकि उस बच्चे ने रोकर उसकी लाज की रक्षा की। उसके बाद वही बालक विश्व में देशभक्त लाला लाजपत राय के नाम से विख्यात हुआ। इन्हीं के सभापतित्त्व में 1920 में कांग्रेस का कलकत्ता में अधिवेशन हुआ था। इन्होंने (1) अछूतोद्धार, (2) मद्यनिषेध, (3) स्वदेशी वस्त्र, (4) राष्ट्रभाषा हिन्दी। इन चार सूत्रों को लेकर गाँधी के नेतृत्व में असहयोग आन्दोलन का प्रस्ताव पास कराया था, जो 1921 में असहयोग आन्दोलन के रूप में प्रसिद्ध हुआ। इसके मूल में आर्य समाज और आर्य समाज के नेता लाला लाजपत राय हैं, इसकी चर्चा नहीं की जाती है। यह चारों कार्य आर्य समाज प्रारम्भ से ही कर रहा है। इसलिए हजारों की संख्या में आर्य समाजियों ने राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लिया और जेल गये, इसलिए उस समय यह जन चर्चा रही कि आर्य समाज के लोग जेल में आर्य समाज का सत्संग लगाते थे। जहाँ प्रातः, सायं हवन होता था आर्य समाज के विद्वानों और संन्यासियों के प्रवचन होते थे, परस्पर एक-दूसरे से सत्याग्रही नमस्ते करते थे, सत्याग्रहियों के विस्तर पर सबसे अधिक धार्मिक पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश मिलती थी। तभी तो 80 प्रतिशत आर्य समाजी जेल गये, यह प्रचलित हो गया जिसे आज दबा दिया गया है।

दक्षिण अफ्रीका में संघर्षरत महात्मा गाँधी जी को बिलड़ा जी ने आर्थिक सहयोग भेजना बन्द कर दिया और गाँधी जी घोर आर्थिक संकट में आ गये उस समय गुरुकुल कांगड़ी के ब्रह्मचारियों द्वारा दान एकत्रित करवाकर 1500 रुपये की सहायता राशि स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने भिजवाई थी। गाँधी जी द्वारा अपने फिजिकल आश्रम के कुछ छात्रों को भारत भेजा गया जिन्हें स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल कांगड़ी में न केवल आश्रय दिया बल्कि उनके भोजन, आवास एवं शिक्षा आदि की व्यवस्था की। गुरुकुल की भूमि पर मोहनदास करमचन्द्र गांधी को 8 अप्रैल, 1915 को स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा 'महात्मा' शब्द से सम्बोधित एवं अभिनन्दित किया गया। तत्कालीन समाचार पत्रों में यह समाचार प्रकाशित है। इस अद्भुत कार्य का यश आर्य समाज को न मिले इसे दबाकर शांति निकेतन और रविन्द्र नाथ टैगोर द्वारा महात्मा शब्द गाँधी को दिया बताया गया, जबकि 17 फरवरी, 1915 को गाँधी शांति निकेतन गये तो टैगोर उनसे मिले भी नहीं और कलकत्ता चले गये। उधर यंग इण्डिया पत्रिका में 1920 में छपा कि एण्ड्यूज ने मिस्टर गाँधी के नाम से मिस्टर काटकर महात्मा गाँधी किया। इस बात का स्पष्टीकरण 'गांधी जी की जीवनी' नामक पुस्तक में लेखक 'श्री दत्ता' ने किया है। सन् 1919 के कांग्रेस के अमृतसर अधिवेशन के अवसर पर स्वामी श्रद्धानन्द जी ने स्वागत भाषण हिन्दी में देकर देश को अवगत करा दिया था कि देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी होनी चाहिए। हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर पदासीन करने का कार्य भी आर्य समाज ने किया। दलित व अछूत कहे जाने वाले व्यक्तियों के बेटे-बेटियाँ आर्य समाज के गुरुकुलों में पढ़ें, यज्ञ में आचार्य और ब्रह्मा के पद पर बैठाकर उन्हें सम्मानित किया। भीमराव अम्बेडकर को पढ़ने के लिए छात्रवृत्ति आर्य समाजी विद्वान् आत्माराम अमृतसरी ने बढ़ौदा नरेश से दिलाई। अपने साथ बैठाकर भोजन कराना, ऑफिस में उचित सम्मान, कार्य में सहभागी बनाने के लिए दलितोद्धार सभा बनाने, बड़े सम्मेलन कराने का, विधर्मियों के चंगुल से बचाने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी ने नारायण कम्पनी खुलवायी, जूते बनाने वाले सारे अछूत मुसलमानों से दूर हो गये और हिन्दुओं के साथ जुड़ गये, इस तरह अछूतों की रक्षा आर्य समाज ने की। आज तथाकथित नेता आर्य समाज का उपकार भूल गये और पाठ्यक्रमों से भी इन सब तथ्यों को गायब कर दिया।

अनुचित तथ्य

2. स्कूली पाठ्यक्रम में कहीं-कहीं पढ़ाया जाता है कि आर्य लोग भारत में बाहर से आये थे और वे भारत के मूल निवासी नहीं हैं।

वास्तविक तथ्य

2. आर्य लोग भारत के मूल निवासी हैं और इसी कारण भारत का पूर्व नाम आर्यावर्त था। वेदों में सृष्टि उत्पत्ति का स्थान त्रिविष्टप (तिब्बत) को माना गया है। अतः तिब्बत से मैदानी क्षेत्र आर्यावर्त सबसे निकट होने के कारण आर्य लोग यहाँ बसते थे। यहीं से अनेक देशों में आर्यो ने अपना क्षेत्र बढ़ाया। ईरान से लेकर इण्डोनेशिया तक एशिया के अनेक देश आर्यो के प्रभाव में थे। आज भी इसके अनेक उदाहरण मिलते हैं।

अनुचित तथ्य

3. कहीं-कहीं यह भी पढ़ाया जाता है कि आर्य लोग महिलाओं के प्रति असभ्य व्यवहार करते थे। उन्हें पढ़ने से रोकते थे। वे छूआछूत पर विश्वास करते थे और वर्ण व्यवस्था के आधार पर समाज में ऊँच-नीच का भेदभाव मानते थे।

वास्तविक तथ्य

3. भारत में प्राचीनकाल से ही माता को प्रथम गुरु माना जाता है। इसलिए आर्यावर्त में महिलाओं को विशेष सम्मान प्राप्त था। आर्य लोग महिलाओं को प्रत्येक क्षेत्र में प्रतिष्ठित होने, सम्मान प्राप्त करने एवं पढ़-लिखकर आगे बढ़ने का पूरा अवसर देते थे। वैदिककाल में गार्गी, मैत्रेयी, भारती आदि विदुषियों का नाम उल्लेखनीय है। जिन्होंने अपने समय में बहुत ऊँचा सम्मान प्राप्त किया। वेदों में वर्ण व्यवस्था कर्म के आधार पर निर्धारित की गई है। जन्मना जाति व्यवस्था को वेदों में नहीं माना गया है।

अनुचित तथ्य

4. अनेक पाठ्यक्रमों में पढ़ाया जा रहा है कि भारत के ऋषि-मुनि गोमाँस खाते थे तथा सोमरस (सुरा) पीते थे।

वास्तविक तथ्य

4. ऋषि-मुनि शुद्ध शाकाहारी थे। 'योगदर्शन' में लिखा है कि - आहार शुद्धौ सत्वशुद्धि अर्थात् शुद्ध सात्विक (बिना हिंसा से प्राप्त, ऋतु अनुकूल, शरीर मन बुद्धि को शान्त रखने वाले भोजन से विचार दृढ़ व पवित्र होते हैं।) वेदों में इतिहास नहीं है। इसलिए यह कहना कि प्राचीनकाल में ऋषि-मुनि गोमाँस खाते थे तथा सोमरस (शराब) का सेवन करते थे, तथ्यहीन एवं बेबुनियाद बात है। वेदों में ऐसा उल्लेख नहीं है। वेद मन्त्रों के भाष्य करने वाले कुछ कथित विद्वान् गलत अर्थ निकालकर ऐसी भ्रांतियाँ उत्पन्न करते हैं। क्योंकि जैसे सोम एक लता का नाम भी है। ऐसे ही पर्यायवाची में अनेक नाम हैं। अतः शब्द के अर्थ का गलत प्रयोग होने से ऐसी भ्रान्तिपूर्ण बातें उत्पन्न होती हैं।

अनुचित तथ्य

5. वर्तमान में पढ़ाया जाने वाला इतिहास भावी पीढ़ी को भ्रमित करने वाला है और उससे उन्हें किसी प्रकार की प्रेरणा नहीं मिलती। इसमें आक्रमणकारियों के वर्णनों की आंकड़ेबाजी भरी हुई है। जो युवाओं में केवल निराशा भरती है। देश के विद्वानों, ऋषियों, मुनियों, राजा-महाराजों का इतिहास प्रायः लुप्त कर दिया गया है।

वास्तविक तथ्य

5. भारत का इतिहास 1960853122 वर्ष का है। केवल भारत में चला आता यह सृष्टि संवत् विश्व को बताता है कि भारत (आर्यावर्त) विश्व का प्रथम विकसित देश रहा है। जिसका वेद, वेदांग, दर्शन, उपनिषदों, आरण्यकों, ब्राह्मणग्रन्थों, स्मृतियों आयुर्वेद, धनुर्वेद गांधर्ववेद, वनस्पति विज्ञान, अंतरिक्ष विज्ञान, समुद्रविज्ञान आदि का अपार अनूठा साहित्य एवं ज्ञान रहा है। जहां मान्धाता, इक्ष्वाकु, अश्वपति, जनक, दशरथ, राम जैसे महान् प्रजापालक राजा हुए। उनका दिव्य इतिहास भारत की भावी पीढ़ी के सामने प्रस्तुत किया जाना चाहिए। महाभारत कालीन योद्धाओं और योगेश्वर श्रीकृष्ण जी महाराज का उज्ज्वल चरित्र एवं इतिहास नई पीढ़ी को पढ़ाया जाना चाहिए और इसी प्रकार छत्रपति शिवाजी, महाराणा प्रताप, लक्ष्मीबाई, विक्रमादित्य, चन्द्रगुप्त, चाणक्य एवं स्वतन्त्रता आन्दोलन के समस्त महानायकों का वीरता, बलिदान एवं त्याग से ओत-प्रोत इतिहास पढ़ाया जाना चाहिए।

अनुचित तथ्य

6. वर्तमान इतिहास में भारतीय भाषाओं की उपेक्षा की गई है।

शेष पृष्ठ 6 पर

नये संकल्पों एवं उत्साहवर्द्धक योजनाओं के साथ मनायें श्रावणी पर्व

– स्वामी आर्यवेश

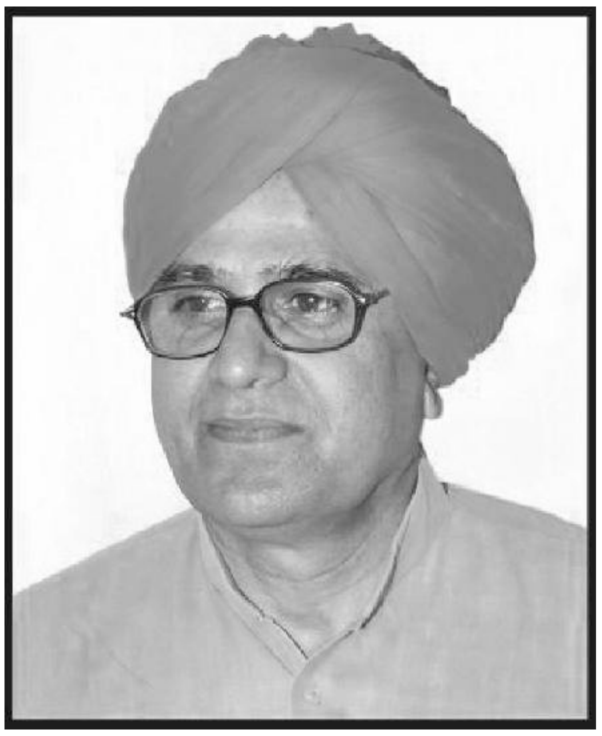

(श्रावणी पर्व को आर्यजन अत्यन्त उत्साह के साथ मनाते हैं। लेकिन इस वर्ष कोरोना संक्रमण के इस वातावरण में अपनी सुरक्षा तथा औरों की सुरक्षा एवं सरकार द्वारा निर्देशित नियमों को ध्यान में रखते हुए इस पर्व को मनायें। श्रावणी पर्व आर्य समाज का मुख्य पर्व है, इसको धूमधाम से मनाने की आवश्यकता है जिससे आर्यों में उत्साह का जागरण हो सके।)

जीवन निर्माण में स्वाध्याय का महत्वपूर्ण स्थान है। वैदिक साहित्य स्वाध्याय की महिमा का बखान करते नहीं थकते। चारो आश्रमों में स्वाध्याय करने का विधान है। वेद का प्रचार तथा वैदिक मूल्यों का स्थापन आर्य समाज की गतिविधियों में प्राथमिक महत्व रखते हैं। वेदों की शिक्षा और विचारधारा से व्यक्ति और चरित्र का निर्माण होता है तथा वेदों का जीवनदर्शन ही आज के जीवन तथा जगत को सत्य, धर्म, न्याय, सुख, शांति और सच्चा आनन्द दे सकता है। इस वर्ष 22 अगस्त, 2021 रविवार को श्रावणी पर्व तथा श्री कृष्ण जन्माष्टमी 30 अगस्त, 2021 सोमवार को है। दोनों पर्वो के बीच का सप्ताह वेद प्रचार सप्ताह के रूप में मनाया जाता है।

श्रावणी पर्व के अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने आर्यों का आह्वान करते हुए कहा कि वेद प्रचार सप्ताह को केवल पारम्परिक रूप में औपचारिकता पूर्ति हेतु मनाने से कोई विशेष लाभ होने वाला नहीं है। हमारा कर्त्तव्य है कि हम सच्चाई व ईमानदारी से वेद प्रचार के कार्यों को सर्वोपरि मानकर उसके प्रचार-प्रसार में समय लगायें। यदि वेद प्रचार सप्ताह को उत्साह पूर्वक अधिकाधिक लोगों को सम्मिलित करके मनायें तथा कुछ विशेष अनुकरणीय कार्य करें तो हम लोगों को प्रभावित भी कर सकते हैं तथा ज्ञान गंगा घर-घर पहुंचा सकते हैं।

श्रावणी पर्व के अवसर पर रक्षाबन्धन का त्यौहार भी बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है जिसमें प्रत्येक भाई अपनी बहनों की रक्षा का संकल्प लेता है। इसी प्रकार यज्ञोपवीत धारण करते समय भी संकल्प लिये जाते हैं। देखा जाये तो श्रावणी पर्व संकल्पों को धारण करने का पर्व है। इस बार का श्रावणी पर्व हम कुछ विशेष संकल्प लेकर मनायें। हम अपनी वैदिक संस्कृति को बचाने, सुरक्षित रखने, आगे बढ़ाने के लिए निम्नलिखित तीन संकल्प लेकर इस पर्व को उत्साहपूर्ण ढंग से मनायें।

1. गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का संवर्द्धन करते हुए गुरुकुलों को सशक्त एवं सबल बनाना तथा सुन्दर व्यवस्था के साथ सुव्यवस्थित एवं आकर्षक बनाने में योगदान देना।

2. संस्कृत भाषा को कम से कम 10वीं कक्षा तक अनिवार्य भाषा के रूप में लागू करवाने का प्रयास करना।

3. महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के वेदभाष्य को समस्त विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित करवाने का प्रयास करना।

इस बार के श्रावणी पर्व को जहाँ हम पारम्परिक ढंग से उत्साह पूर्वक मनायें वहीं उपर्युक्त संकल्पों को पूर्ण करवाने के लिए दृढ़ संकल्पित हों और पूरी निष्ठा के साथ इस कार्य को पूर्ण करने के लिए संगठित होकर अग्रसर हों। इसके लिए यह आवश्यक है कि गुरुकुलों के सभी स्नातक, योगी, हित चिन्तक एवं आचार्यगण श्रावणी के अवसर पर अपने-अपने क्षेत्र के गुरुकुलों या प्रमुख आर्य समाजों में एकत्रित होकर उपरोक्त महत्त्वपूर्ण संकल्प सामूहिक रूप से लें और उसे क्रियान्वित करने के लिए ठोस योजना बनायें।

श्रावणी पर्व अर्थात् रक्षा बन्धन से लेकर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक सार्वजनिक स्थलों, पार्कों अथवा बाजारों में अलग-अलग स्थानों पर बृहद यज्ञों का आयोजन करें। आर्य समाज के सदस्यों के अतिरिक्त क्षेत्र के प्रबुद्ध व्यक्तियों को विशेष रूप से आमन्त्रित करें तथा उन्हें यजमान भी बनायें। सामान्य जनों में अपने उद्देश्यों व सिद्धान्तों का अधिकाधिक प्रचार करें तथा उन्हें अपने विशेष आयोजनों तथा साप्ताहिक सत्संगों में आमंत्रित करें। यज्ञोपरान्त जलपान तथा ऋषि लंगर अधिकाधिक लोगों में वितरित करें।

यज्ञ के अवसर पर आर्य विद्वानों तथा स्वाध्यायशील आर्य महानुभावों के उपदेश अवश्य आयोजित किये जायें जिससे जन सामान्य को वैदिक आध्यात्मिक तथा आर्य विचारों से सन्मार्ग के लिए प्रेरित किया जा सके।

अपने-अपने क्षेत्र के अलग-अलग वर्गो जैसे युवाओं, महिलाओं, वृद्धों, बच्चों आदि के लिए अलग-अलग विचार विमर्श या मार्ग दर्शन कार्यक्रम, गोष्ठियां या लघु सम्मेलन आयोजित करें।

वेद कथा का आयोजन रात्रि में आर्य समाज मंदिरों अथवा सार्वजनिक स्थानों पर अवश्य किया जाये जिससे वेद की शिक्षाओं का लाभ धार्मिक, सामाजिक, पारिवारिक, राष्ट्रीय तथा राजनैतिक उत्थान के लिए मिल सके।

क्षेत्रीय जनता जैसे उच्च पुलिस अधिकारी, सैन्य बलों के अधिकारी विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ जैसे डाक्टर, वकील, इंजीनियर तथा विशेष रूप से युवा वर्ग को आर्य समाज तथा स्वामी दयानन्द के विचारों से परिचित कराने हेतु अल्प मूल्य का लघु साहित्य भेंट स्वरूप प्रदान करें। अनजान और अनभिज्ञ लोगों को वेद के ज्ञान के दायरे में लाना हमारा परम कर्तव्य होना चाहिए।

आर्य समाज के समस्त सदस्यों की एक विशेष बैठक आयोजित करके समालोचना अवश्य करें कि क्या हमारे आर्य समाज की गतिविधियां सन्तोष जनक हैं? क्या इससे और अधिक कुछ किया जा सकता है? इस पर विचार करें तथा कार्यरूप में परिणत करें।

वेद प्रचार सप्ताह के अन्तर्गत श्रावणी पर्व से लेकर श्री कृष्ण जन्माष्टमी तक प्रतिदिन प्रातः प्रभात फेरी (जन-जागरण) निकालने के विशेष प्रयास किये जाने चाहिए जिसमें बच्चे, युवा, वृद्ध, नर-नारी सभी वर्ग के लोग उपस्थित हों तथा भजनों, नारों और जगह-जगह पर संक्षिप्त रूप से आर्य समाज के मन्तव्यों तथा सिद्धान्तों का प्रचार किया जाये तो अति उत्तम होगा।

स्वामी जी ने आर्यों का आह्वान करते हुए कहा कि जातिवाद, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, शोषण, पाखण्ड, नारी उत्पीड़न के ऊपर सभी आर्य समाजों में गम्भीर चर्चा होनी चाहिए और इस पर कार्य योजना भी बनानी चाहिए। अन्य कार्यक्रमों के अतिरिक्त जो वंचित, शोषित जन हमसे दूर हुए और अलग-थलग पड़े लोग हैं उनको साथ मिलाने की आज बहुत आवश्यकता है। हमारा यह दायित्व बनता है कि हम आर्य समाज में तो यज्ञ करें ही लेकिन उन बस्तियों में भी जाकर यज्ञ करें तथा सहभोज का आयोजन करें जहाँ इस प्रकार के लोग निवास करते हैं। जात-पात उन्मूलन की आवश्यकता सबसे अधिक है और गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर ही हमें चलना चाहिए। वंचित, शोषित व उपेक्षित वर्ग को जोड़ना इस श्रावणी पर्व पर विशेष अभियान की तरह चलाया जाना चाहिए। उपेक्षित वर्ग को आर्य समाज में आमंत्रित करके तथा उनका सम्मान करके भी हम जात-पात पर निर्णायक प्रहार कर सकते हैं। इस कार्य से देश में हो रहे धर्मान्तरण के कुचक्र को भी रोकने में सफलता प्राप्त की जा सकती है। क्योंकि धर्मान्तरण की अधिकतम कार्यवाही समाज के इन वंचित और उपेक्षित वर्गों के भाई-बहनों पर ही की जाती है।

एक सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य जो हम सबको अवश्य ही करना चाहिए वह है कि ऐसी छवि बनाना जिससे लोग कहें कि हाँ यह आर्य समाजी हैं। हमें अपने कार्यों से चरित्र से, व्यवहार से, अपने पास-पड़ोस के लोगों पर विशेष छाप छोड़नी चाहिए और इसके लिए अपने पास-पड़ोस और गली-मुहल्ले के लोगों के घरों में दुःख तथा सुख में बराबर का भागीदार बनना होगा। उनकी सहायता करनी होगी। उनके पारिवारिक कार्यक्रमों में आर्य समाज के सदस्य के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर यथाशक्ति सहयोग प्रदान करना चाहिए। लोगों से मेल-मिलाप और सहयोगी प्रवृत्ति के द्वारा हम अपने साथ लोगों को जोड़ पायेंगे और जब लोग जुड़ेंगे तभी तो हम उन तक अपनी बात पहुँचा पायेंगे। इस पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

श्रावणी वाले दिन विशेष यज्ञ के अवसर पर यज्ञोपवीत धारण करना तथा परिवर्तित करना विशेष रूप से सम्पादित किया जाये तथा यज्ञोपवीत क्यों धारण करना चाहिए तथा उसकी महत्ता के विषय में आम जनता को परिचित कराना न भूलें।

इसी दिन हैदराबाद सत्याग्रह के धर्म युद्ध में अपने प्राणों की आहुति देने वाले उन शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की जानी चाहिए जिन्होंने धर्म की बलिवेदी पर अपने प्राण न्योछावर कर दिये थे। रक्षा बन्धन पर्व के वैदिक स्वरूप का प्रचार तथा गुरुकुल जैसी संस्थाओं को सहायता देना तथा संस्थाओं की रक्षा का ब्रत विशेष रूप से लिया जाना चाहिए।

स्वामी जी ने कहा कि हमारा प्रयास होना चाहिए कि इस वेद प्रचार सप्ताह के आयोजन में युवाओं की अधिक से अधिक भागीदारी सुनिश्चित करें। क्योंकि सुप्त पड़ी युवा पीढ़ी को नव-जीवन देने तथा राष्ट्र की मुख्यधारा से जोड़ने तथा अश्लीलता, नशाखोरी एवं शारीरिक, मानसिक, आत्मिक आरोग्यता को दूर करने के लिए युवाओं का संस्कारित होना अत्यन्त आवश्यक है। उनमें चरित्र निर्माण के प्रति जागरूकता पैदा करना, अध्यात्म, योग साधना और सद्‌मन्तव्यों के प्रति रुचि जाग्रत करना तथा जीवन में आत्मानुशासन के प्रति प्रतिबद्धता लाना तथा सात्विकता को जीवन में स्थान देना जैसे गुणों को मुखरित करके हम उन्हें आर्य समाज से जोड़ सकते हैं और उनको नव-जीवन प्रदान कर सकते हैं, अतः इस बार अधिक से अधिक युवा हमारे कार्यक्रमों में आने चाहिए।

वेद प्रचार सप्ताह के दिनों में प्रतिदिन स्वच्छता अभियान चलायें अपने पास पड़ोस के क्षेत्रों में स्वयं सफाई करें तथा अन्य व्यक्तियों को प्रेरित करें कि वे अपने पास-पड़ोस के क्षेत्र को सदैव स्वच्छ रखें।

स्वामी जी ने देश-विदेश में फैल रहे पर्यावरण प्रदूषण को दूर करने के लिए इस अवसर पर अधिक से अधिक वृक्ष लगाने का आह्वान भी किया उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति कम से कम एक पौधा अवश्य रोपित करे और पर्यावरण के सम्बन्ध में लोगों में जागृति लाने का प्रयास करे।

हम आर्य समाजी इस अवसर पर कुछ अलग करके दिखायें जिससे आम जनों में आर्य समाज की एक अलग छवि निर्मित हो और लोग हमसे प्रभावित हों। यदि वेद प्रचार सप्ताह के दौरान कुछ नये व्यक्तियों को हम आर्य समाज से जोड़ पायें तो यह वेद प्रचार सप्ताह मनाना सफल माना जायेगा।

30 अगस्त, 2021 को श्री कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर विशेष यज्ञ की पूर्णाहुति तथा योगीराज श्री कृष्ण जी के वैदिक स्वरूप का दिग्दर्शन विस्तृत रूप से आम जनता को कराया जाये जिससे योगीराज श्री कृष्ण के सच्चे स्वरूप का ज्ञान लोगों को प्राप्त हो तथा उनके बारे में फैली हुई भ्रांतियां दूर हों।

आर्य समाज का मुख्य कार्य वेद प्रचार, मानव निर्माण, राष्ट्र निर्माण तथा सत्य धर्म का प्रचार करना है। वेद का पढ़ना और पढ़ाना, सुनना और सुनाना प्रत्येक आर्य का परम धर्म है अतः वेद मय होकर दयानन्द के भक्तों आगे बढ़ो और वेद प्रचार करो।

इस श्रावणी पर्व पर हम सब आर्यों को संकल्प लेना चाहिए कि ईमानदारी व कर्मठता से हम आर्य समाज का कार्य करेंगे तथा सक्रिय होकर आगे आयेंगे एवं नये जोश के साथ जन-जागरण का कार्य प्रारम्भ करेंगे।

आर्य समाज तथा सार्वदेशिक सभा की गतिविधियों की जानकारी प्राप्त करने के लिए सार्वदेशिक सभा के मुखपत्र ''वैदिक सार्वदेशिक'' के स्वयं ग्राहक बनें तथा अन्य व्यक्तियों को ग्राहक बनाने का प्रयास करें। ''वैदिक सार्वदेशिक'' का वार्षिक शुल्क 250/- रुपये तथा आजीवन शुल्क 2500/- रुपये मात्र है। अपने आर्य समाजों द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की सूचना चित्र सहित प्रकाशित करने के लिए अवश्य भेजें जिससे आर्य जगत की गतिविधियों का प्रचार-प्रसार हो तथा अन्यों को प्रेरणा प्राप्त हो सके।

टिटौली में विशेष यज्ञ तथा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया

रक्तदान करना किसी की जान बचाने का महत्त्वपूर्ण कार्य है

– स्वामी आर्यवेश

21 जुलाई, 2021, रक्तदान करना और करवाना किसी जरूरतमंद इंसान की जान बचाने का कार्य है। जब भी अवसर मिले एक स्वस्थ व्यक्ति को रक्तदान अवश्य करना चाहिए। यह बात सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कुंडू भवन, टिटौली में आयोजित रक्तदान शिविर से पूर्व किये गए यज्ञ के अवसर पर कही। उन्होंने कहा कि यज्ञ व रक्तदान दोनों परोपकार का ही हिस्सा हैं। आर्य समाज कोविड रिलीफ अभियान के राष्ट्रीय संयोजक स्वामी आदित्यवेश जी ने टिटौली में कहा कि धर्म शब्द संस्कृत भाषा का शब्द है। यह शब्द हिन्दी भाषा में संस्कृत से ही आया है। अंग्रेजी, उर्दू, फारसी, अरबी व संसार की अन्य भाषाओं में इसका प्रयोग नहीं हुआ है। वेद निर्विवाद रूप से संसार की सबसे पुरानी पुस्तक है। उन्होंने आगे कहा कि धर्म मनुष्य जीवन में श्रेष्ठ गुण, कर्म व स्वभाव को धारण करने को कहते हैं। मनुष्य को क्या धारण करना चाहिये? मनुष्य के लिए सबसे अच्छी व आवश्यक यदि कोई वस्तु संसार में है तो वह 'सच्चे व अच्छे गुण, कर्म व स्वभाव' ही हैं। यह अच्छे गुण, कर्म व स्वभाव का धारण व परोपकार ही धर्म पालन कहलाता है।

अमित आर्य व तकदीर आर्य ने जानकारी देते हुए बताया कि शिविर में कुल 63 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। राजेश जैन ने ब्लड कलेक्शन बस भेजी व पीजीआई के स्टाफ ने रक्त एकत्रित किया। यह कार्यक्रम समाज में दूसरों के जीवन को बचाने की प्रेरणा के लिए आयोजित किया गया। स्वामी शोभानाथ व विशालनाथ के अतिरिक्त आर्य समाज टिटौली से प्रवीण आर्य, मनीष, मनु मेंबर, सुनील, तकदीर आर्य, राजबीर वशिष्ठ, ऋषिराज शास्त्री, अमित आर्य, कृष्ण प्रजापत, जिले सिंह आर्य, व अन्य ग्रामीणों का सराहनीय सहयोग रहा।

आर्य समाज नागौरी गेट, हिसार में आहूत प्रमुख कार्यकर्ताओं की बैठक में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी हुए सम्मिलित

आर्य समाज नागौरी गेट, हिसार, हरियाणा में आयोजित कार्यकर्ताओं की एक महत्त्वपूर्ण बैठक में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा क्रांतिकारी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी विशेष रूप से पधारे। इस बैठक में आर्य समाज के प्रधान चौ. हरिसिंह सैनी, उपप्रधान श्री बलवीर सिंह आर्य, कोषाध्यक्ष श्री सत्यप्रकाश आर्य, श्री महावीर सिंह रिटायर तहसीलदार, श्री नन्दराम सांगवान, श्री शोभाचन्द्र आर्य, श्री जगदीश आर्य, श्री बलवन्त आर्य, स्वामी चेतनानन्द जी, श्री देशवाल जी सहित अनेकों वरिष्ठ कार्यकर्ता एवं गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।

इस बैठक में कोरोना संक्रमणकाल में आर्य समाज की शिथिल हो गई गतिविधियों को पुनः तीव्र गति से चलाने के लिए विचार–विमर्श किये गये। आर्य समाज के प्रचार–प्रसार की योजना बनाई गई तथा पूरे उत्साह के साथ श्रावणी तथा जन्माष्टमी पर्व मनाने पर विचार किया गया। इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि कोरोना संक्रमणकाल में आर्य समाज के कार्यों को काफी क्षति पहुँची है और जैसे–जैसे कोरोना से देश को मुक्ति प्राप्त हो रही है, वैसे–वैसे हमें अपनी सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए अपनी गतिविधियों को बढ़ाने के लिए प्रयासरत होना चाहिए। सभी कार्यकर्ताओं में जोश तथा उत्साह बढ़ाने के लिए समय–समय पर इस प्रकार के विचार–विमर्श भी होते रहने चाहिए।

स्वामी आदित्यवेश जी ने कहा कि आर्य समाज नागौरी गेट, हिसार हरियाणा की एक मुख्य समाज है और यह समाज निरन्तर अपनी गतिविधियों के लिए जानी जाती है। भविष्य में भी आर्य समाज नागौरी गेट के पदाधिकारी तथा कार्यकर्ता विशेष कार्यक्रमों के द्वारा आर्य समाज के प्रचार–प्रसार में अपना योगदान प्रदान करते रहें। स्वामी आर्यवेश जी और स्वामी आदित्यवेश जी के पधारने से कार्यकर्ताओं में जोश की लहर दौड़ पड़ी और सभी ने आने वाले पर्वों को पूर्ण उत्साह के साथ मनाने का आश्वासन दिया।

प्रसिद्ध समाजसेवी एवं आर्यनेता श्री बलवीर सिंह चौहान की प्रेरणा सभा 18 जुलाई, 2021 को आर्य समाज सैक्टर–7, चण्डीगढ़ में सम्पन्न

आर्य समाज का एक और स्तम्भ गिर गया

– स्वामी आर्यवेश

श्री बलवीर सिंह चौहान का व्यक्तित्व प्रेरणादायक था

– स्वामी आदित्यवेश

बलवीर सिंह चौहान मेरे आत्मीय मित्र थे

– फूलचन्द मुलाना

चौहान साहब के देहावसान से आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति हुई है

– सोमदत्त शास्त्री

प्रसिद्ध समाजसेवी एवं आर्यनेता श्री बलवीर सिंह चौहान का 6 जुलाई, 2021 को 92 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि (प्रेरणा सभा) का आयोजन 18 जुलाई, 2021 को आर्य समाज सैक्टर–7, चण्डीगढ़ में किया गया। प्रेरणा सभा में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी, कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष तथा हरियाणा सरकार के पूर्व मंत्री श्री फूलचन्द मुलाना जी, श्री प्रकाश चन्द्र शर्मा सहित अनेकों गणमान्य लोगों ने स्व. श्री बलवीर सिंह चौहान जी को श्रद्धांजलि अर्पित की। प्रेरणा सभा का संयोजन वैदिक विद्वान श्री सोमदत्त शास्त्री जी ने किया तथा आर्य समाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री भूपेन्द्र आर्य ने भजनों के द्वारा अपने श्रद्धा पुष्प अर्पित किये। इस सभा में चण्डीगढ़ की समस्त आर्य समाजों के पदाधिकारी, प्रमुख सदस्यों एवं स्व. चौहान साहब के परिवार एवं सम्बन्धीजनों ने सैकड़ों की संख्या में भाग लिया।

अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए स्वामी आदित्यवेश जी ने स्व. बलवीर सिंह चौहान को एक प्रेरणादायक व्यक्तित्व बताया। उन्होंने कहा कि वे सदैव युवकों का उत्साहवर्द्धन किया करते थे तथा आर्य समाज का कार्य करने की प्रेरणा देते रहते थे। चौहान साहब आजीवन आर्य समाज को समर्पित रहे। वे आर्य समाज सैक्टर–22 के प्रधान, मंत्री तथा संरक्षक के पद पर वर्षों तक प्रतिष्ठित रहे। उनके कार्यकाल में बाहर से आने वाले लोगों का विशेष सम्मान तथा आतिथ्य होता था। जो लोग आर्य समाज में बाहर से आते थे वे चौहान साहब के आतिथ्य एवं व्यवहार से खुश होकर मुक्तकंठ से उनकी प्रशंसा करते थे।

कांग्रेस नेता तथा हरियाणा सरकार के पूर्वमंत्री श्री फूलचन्द मुलाना ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि श्री चौहान साहब उनके आत्मीय मित्र थे। उनका गांव छेटा, उनके विधानसभा क्षेत्र में आता है। अतः मेरे वे हमेशा सहयोगी रहे। उनका व्यक्तित्व बेहद आकर्षक था और उन्होंने आर्य समाज के विचारों को न केवल अपने जीवन में अपनाया बल्कि बहुत सारे लोगों में प्रचारित व प्रसारित भी किया। उनके निधन से मुझे व्यक्तिगत क्षति हुई है।

श्री प्रकाश चन्द्र शर्मा जी ने अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए श्री चौहान साहब को आर्य समाज का प्रथम पंक्ति का नेता बताते हुए उनके कृतित्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि श्री चौहान साहब आर्य समाज के अथक प्रहरी थे और हर समय आर्य समाज के कार्यों में ही लगा रहना उनकी विशेषता थी। उन्होंने जो कार्य आर्य समाज के लिए किये हैं वे आज की युवा पीढ़ी के लिए अनुकरणीय हैं।

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने श्रद्धा–सुमन अर्पित करते हुए कहा कि श्री चौहान साहब से मेरा परिचय 51 वर्ष पहले हुआ था। उनके साथ अनेकों बार मिलना तथा विविध कार्यक्रमों, अभियानों, जन–चेतना यात्राओं तथा आर्य समाज की गतिविधियों में उनका सक्रिय सहयोग प्राप्त होता था। प्रारम्भ के दिनों में 'राजधर्म' पत्रिका के सदस्यता अभियान एवं विज्ञापन संग्रह आदि में चौहान साहब का सक्रिय योगदान रहा था। वे पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी व स्वामी अग्निवेश जी के साथ प्रारम्भ से ही जुड़ गये थे और जीवन के अन्तिम श्वांस तक वे आर्य समाज में युवा शक्ति को अपना समर्थन, सहयोग एवं मार्गदर्शन देते रहे। चौहान साहब का जन्म ग्राम बिहटा, जिला–अम्बाला में हुआ था। उनकी शिक्षा पहले गांव के स्कूल में और उसके पश्चात् लाहौर में हुई। उन्होंने उर्दू और अंग्रेजी में अपनी शिक्षा ग्रहण की थी और बाद में व्यवहार की दृष्टि से उन्हें हिन्दी भी सीखनी पड़ी। बचपन से ही वे आर्य समाज के सम्पर्क में आ गये थे और उसके पश्चात् आर्य समाज के प्रतिष्ठित नेता के रूप में विख्यात हुए। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के विवाद में पंजाब एवं हरियाणा हाईकोट चण्डीगढ़ द्वारा उन्हें रिसीवर नियुक्त किया गया और उनकी देख–रेख में सभा का विधिवत निर्वाचन हुआ। जब स्वामी इन्द्रवेश जी तथा स्वामी अग्निवेश जी ने 'आर्य सभा' के नाम से राजनीतिक पार्टी बनाकर कार्य शुरू किया तो चौहान साहब चण्डीगढ़ में अग्रिम पंक्ति के नेता बने। सन् 2005 में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में कन्या भ्रूण हत्या एवं महिला उत्पीड़न के विरुद्ध टंकारा से अमृतसर तक की ऐतिहासिक जन–चेतना यात्रा का चण्डीगढ़ में भव्य स्वागत एवं व्यवस्था का सम्पूर्ण दायित्व चौहान साहब ने अपने कंधों पर लिया था और उसके लिए उन्होंने अपनी टीम के साथ पूरी ताकत लगाई और कार्यक्रम को सफल बनाया। कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध जो अभियान उस समय आर्य समाज ने चलाया था वही अभियान आज पूरे देश में सामाजिक संस्थाओं, राजनैतिक पार्टियों, प्रान्तीय सरकारों तथा केन्द्र सरकार का मुख्य एजेण्डा बना हुआ है। आज सभी नारे लगा रहे हैं – बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ। इसके मूल में आर्य समाज की वह ऐतिहासिक यात्रा और श्री चौहान साहब जैसे मजबूत नेता रहे हैं। श्री बलवीर सिंह चौहान अत्यन्त सूझबूझ एवं अनुभव प्राप्त व्यक्तित्व के धनी थे। उनके व्यक्तित्व में गम्भीरता, मिलनसारिता, व्यवहारकुशलता, सरलता, सौम्यता तथा सात्विकता ओत–प्रोत थी। वे सदैव प्रसन्न मुद्रा में रहते थे। कभी भी उनमें तनाव या निराशा देखने को नहीं मिली। आदर्श गृहस्थी के रूप में चौहान साहब का जीवन एक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। वे और उनकी धर्मपत्नी स्व. श्रीमती संतोष चौहान सदैव आर्य समाज के लिए सर्वात्मना समर्पित रहे, उनका परस्पर आत्मीय एवं प्रगाढ़ सम्बन्ध एक आदर्श के रूप में स्मरण किया जायेगा। उन्होंने अपनी सन्तानों को भी आर्य विचारों से ओत–प्रोत किया। अपने जीवन में कभी भी अनैतिक व्यवहार किसी रूप में भी उन्होंने नहीं किया। एक ऐसा आदर्श व्यक्तित्व था चौहान साहब का। स्वामी जी ने कहा कि उनके निधन से आर्य समाज का एक मजबूत स्तम्भ गिर गया है और इस अपूर्णीय क्षति से चण्डीगढ़, हरियाणा तथा पंजाब में आर्य समाज के क्षेत्र में विशेष आघात पहुँचा है। उनके निधन को मैं अपनी व्यक्तिगत क्षति भी मानता हूँ, क्योंकि हर स्थिति में उनका सदैव विशेष मार्गदर्शन मुझे प्राप्त होता था।

स्वामी जी ने इस अवसर पर स्व. चौहान साहब को अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए पारिवारिकजनों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति देने की परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की।

इस अवसर पर परिवार की ओर से स्व. चौहान साहब की चाची श्रीमती सरला देवी चौहान, चौहान साहब के छोटे भाई श्री निर्मल सिंह चौहान, उनके बड़े सुपुत्र श्री अश्विनी चौहान एवं पुत्रवधु श्रीमती ऊषा चौहान, श्री अवनीश चौहान (बिन्दू) व पुत्रवधु श्रीमती सीमा, उनकी बेटी श्रीमती अर्चना व दामाद श्री भरतदेव सिंह के सुपुत्र श्री आदर्श व श्री जय कुमार, उनके पौत्र श्री अभिनव व श्री अभिमन्यु, श्री आदित्य व श्री सिद्धान्त, दौहित्र श्री भानुदेव, कु. रेनू व श्री गौतम आदि ने आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद किया। आर्य समाज सैक्टर–7 के प्रधान श्री रविन्द्र तलवार, मंत्री श्री प्रकाश चन्द्र शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री आनन्दशील, आर्य समाज सैक्टर–22 के प्रचारमंत्री मेजर विजय आर्य, उपमंत्री श्री लक्ष्मण शास्त्री तथा श्री मनोज कुमार शास्त्री, श्री राजकुमार आर्य व उनके सुपुत्र श्री विरेन्द्र कुमार आर्य ने व्यवस्था में सहयोग किया।

पृष्ठ 2 का शेष

भारतीय इतिहास के पाठ्यक्रम में संशोधन हेतु गठित समिति को भेजे गये वांछित सुझाव

वास्तविक तथ्य

6. भारतीय इतिहास की शिक्षा के लिए अधिकतर राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रयोग किया जाना चाहिए। जहाँ पर हिन्दी के प्रयोग में कठिनाई हो वहाँ प्रान्तीय भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए। भारत के राज्य व केन्द्र सरकार परस्पर हिन्दी में संपर्क करें और अंग्रेजी प्रयोग को प्रतिबन्धित रखें। सांस्कृतिक व आधार भाषा के रूप में संस्कृत को कक्षा प्रथम अथवा कक्षा पांचवीं से बारहवीं तक अनिवार्य रुप से पढ़ाया जाए। जिससे देश में एक भाषा व संस्कृति विकसित हो सके। अंग्रेजी को ऐच्छिक विषय बनाया जाये।

अनुचित तथ्य

7. कालेजों के पाठ्यक्रम में बहुत सारी पुस्तकें विदेशी लेखकों की पढ़ाई जाती हैं और भारतीय विद्वानों की उपेक्षा की जाती है यथा एम.ए. की कक्षाओं में वेद भाष्य विदेशी लेखक मैक्स मूलर, मैक-डोनॉल्ड व कीथ आदि का पढ़ाया जाता है और भारतीय वेद भाष्यकारों में सांयण तथा महीधर आदि का भाष्य पढ़ाया जाता है जो व्याकरण, भावार्थ तथा भाषार्थ आदि की दृष्टि से गलत है।

वास्तविक तथ्य

7. आर्यो ने सदैव वैदिक शिक्षाओं को सर्वोपरि माना है और महर्षि दयानन्द कृत वेद भाष्य ही व्याकरण एवं भावार्थ आदि की दृष्टि से सबसे शुद्ध भाष्य है। इसी को शिक्षा पद्धति में अपनाया जाना चाहिए।

अनुचित तथ्य

8. बहुत से विषयों में जैसे साहित्य, ज्योतिष व कर्मकाण्ड आदि में अवैज्ञानिक, अश्लील, तर्कहीन बातें पढ़ाई जाती हैं जिससे अन्धविश्वास एवं अज्ञान के सिवाय कुछ प्राप्त नहीं होता।

वास्तविक तथ्य

8. प्राचीन भारतीय संस्कृति में अवैज्ञानिक, तर्कहीन, अन्धविश्वास, ज्योतिष, कर्मकाण्ड तथा अश्लीलता का सदैव विरोध रहा है और केवल वेदानुकूल, तथ्यपरक तथा वैज्ञानिक पद्धति को अपनाया जाता रहा है।

अनुचित तथ्य

9. पुराणों में देवी देवताओं एवं महापुरुषों के संबंध में अश्लील एवं चरित्र हनन करने वाली टिप्पणियाँ हैं, जो अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण हैं।

वास्तविक तथ्य

9. हमारे सभी देवी देवता व महापुरुष उच्च चरित्र एवं सात्विक गुणों से ओत-प्रोत थे। उनकी आध्यात्मिक उन्नति मानव मात्र का कल्याण करने वाली थी। उनके जीवन में किसी प्रकार का दोष नहीं था।

अनुचित तथ्य

10. विज्ञान की पुस्तकों में डारविन के विकासवाद का सिद्धांत पढ़ाया जाता है। जिसके अनुसार मानव की उत्पत्ति बंदर से दर्शायी गई है।

वास्तविक तथ्य

10. वैदिक सिद्धान्त के अनुसार मनुष्य का जन्म पूर्व जन्म के कर्मो के अनुसार होता है। सृष्टि के प्रारम्भ में परमपिता परमात्मा सृष्टि की रचना करते हैं। अन्य सभी जीव जन्तुओं व पशु पक्षियों को पैदा करने के उपरान्त मनुष्य की उत्पत्ति होती है। प्रारम्भ में अमैथुनी सृष्टि तथा बाद में मैथुनी सृष्टि होती है। इस विषय में विस्तार से विद्वानों के साथ विचार-विमर्श होना आवश्यक है। क्योंकि डार्विन के सिद्धान्त से कोरा अज्ञान ही फैलाया जा रहा है। सृष्टि उत्पत्ति का यह तरीका न ही तर्क संगत है और न ही सृष्टि नियम के अनुकूल है। इस सम्बन्ध में वेदों में तथा महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा लिखित 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' में विस्तार से उल्लेखित है। अतः बंदर से मनुष्य की उत्पत्ति न पढ़ाकर वैदिक सृष्टि उत्पत्ति के सिद्धांत को पढ़ाया जाए।

अनुचित तथ्य

11. कर्मकाण्ड के विषयों में फलित ज्योतिष, राशिफल एवं रेखा विज्ञान आदि अवैज्ञानिक विषय वस्तु पढ़ाई जाती है। जो कि गलत है।

वास्तिवक तथ्य

11. गणित ज्योतिष वैज्ञानिक है, फलित ज्योतिष नहीं, ऐसी प्राचीन ऋषियों की मान्यता है। राशि फल पूर्णतया कपोल कल्पित विचार है और इसी प्रकार से रेखा विज्ञान भी। अतः फलित ज्योतिष को न पढ़ाकर, गणित ज्योतिष को ही पढ़ाना चाहिए।

आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आपसे प्रार्थना है कि आप राज्यसभा की इतिहास संशोधन करने वाली समिति को निर्देशित करके उपरोक्त सुझावों के अनुरूप पाठ्यक्रम में अनुचित तथ्य हटाकर वास्तविक तथ्यों को सम्मिलित कराने का कष्ट करें।

विशेष नोट : यदि समिति आवश्यक समझे तो वैदिक विद्वानों से विचार-विमर्श कर उपरोक्त संदर्भ में प्रामाणिक तथ्य प्राप्त कर सकती है।

सधन्यवाद,

भवदीय

(स्वामी आर्यवेश)
सभा प्रधान

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर-घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

भारी छूट पर उपलब्ध

मात्र 3100/- में

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

एक वेद सैट मात्र 3100/- रुपये में उपलब्ध है।

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर

लागत मूल्य में 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 300/- रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी।

-: प्रकाशक :-

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002 • दूरभाष : 011-23274771

महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के प्रति यू.जी.सी. द्वारा की गई उपेक्षा के विरुद्ध आर्य जगत में भारी रोष सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने यू.जी.सी. के चेयरमैन को रिमाइंडर पत्र लिखकर दी चेतावनी

पूर्व पत्र

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

WORLD COUNCIL OF ARYA SAMAJ

"दयानन्द भवन", 3/5, आसफ अली रोड
(रामलीला मैदान), नई दिल्ली-110002
"Dayanand Bhawan", 3/5, Asaf Ali Road
(Ramlila Ground), New Delhi-110002

फा. सं. सार्व. आ. प्र.सभा/21/1525 दिनांक - 30-06-2021

सेवा में,
माननीय श्री रमेश पोखरियाल निशंक जी
शिक्षामंत्री, भारत सरकार
शिक्षा मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली-1

विषय :- यू.जी.सी. द्वारा 19वीं एवं 20वीं शताब्दी के दार्शनिकों में महर्षि दयानन्द सरस्वती का नाम सम्मिलित न किये जाने के सम्बन्ध में।

महोदय,

आशा है ईश कृपा से आप स्वस्थ एवं सानन्द होंगे। निवेदन है कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) ने दर्शन का नया पाठ्यक्रम अपनी बैवसाईट पर कुछ समय पूर्व अपलोड किया है। इस पाठ्यक्रम की इकाई-5(V) में समकालीन 19वीं एवं 20वीं शताब्दी के दार्शनिकों के जो नाम अपलोड किये गये हैं उनमें स्वामी विवेकानन्द, श्री अरविन्द, महात्मा गांधी सहित 15 लोगों के नाम लिखे गये हैं जिनमें स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का नाम नहीं है। जबकि वे समकालीन भारतीय दर्शन के शिखर पुरुष थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश एवं वेद भाष्य जैसी रचनाओं के द्वारा अपने उच्च दार्शनिकता एवं पाण्डित्य का परिचय दिया हुआ है। उसके बावजूद समकालीन दार्शनिकों की सूची में उनका नाम सम्मिलित न करना हास्यास्पद लगता है। जबकि हम सभी को सर्वविदित है कि जिन दार्शनिकों के नाम इस सूची में अपलोड किये गये हैं, इनमें से अधिकांश पर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का विशेष प्रभाव रहा है।

नेट एवं सोशल मीडिया पर यह सूचना प्रसारित होने से कि यू.जी.सी. ने समकालीन दार्शनिकों की सूची में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का नाम नहीं दिया है इससे आर्य समाज संगठन एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुयायियों में असंतोष एवं आक्रोश है। आप जैसे शिक्षाविद एवं महर्षि दयानन्द के समर्थक के भारत सरकार में मंत्री रहते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती की उपेक्षा होना अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है।

अतः आपसे प्रार्थना है कि आप अपने शिक्षा मंत्रालय की ओर से इस विषय पर स्वयं हस्तक्षेप करके इन दार्शनिकों की सूची में महर्षि दयानन्द सरस्वती का नाम सम्मिलित कराकर आर्यजनों एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुयायियों की भावनाओं का सम्मान करें। इसके साथ ही आप यू.जी.सी. को निर्देश जारी करें कि दार्शनिकों की वर्तमान अपूर्ण सूची को अपनी बैवसाइट से हटाकर उस सूची में महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम को सम्मिलित करके संशोधित सूची को अपलोड करें। आशा है आप उपरोक्त विषय पर अपने मंत्रालय की ओर से शीघ्र उचित कार्यवाही करते हुए तत्काल यू.जी.सी. को निर्देश जारी कर कृतार्थ करेंगे।

सधन्यवाद,

भवदीय

(स्वामी आर्यवेश)
सभा प्रधान

प्रतिलिपि :- सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु।
श्री धीरेन्द्र पाल सिंह
चेयरमैन, यू.जी.सी., बहादुरशाह जफर मार्ग
आई.टी.ओ., नई दिल्ली-110002

दूरभाष : 011-23274771, 23260985, टेलीफैक्स : 011-23274216
ई–मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in
वैबसाईट : www.vedicaryasamaj.com

रिमाइंडर पत्र

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

WORLD COUNCIL OF ARYA SAMAJ

"दयानन्द भवन", 3/5, आसफ अली रोड
(रामलीला मैदान), नई दिल्ली-110002
"Dayanand Bhawan", 3/5, Asaf Ali Road
(Ramlila Ground), New Delhi-110002

फा. सं. सार्व. आ. प्र.सभा/21/1541 दिनांक : 19-07-2021

सेवा में,
श्री धीरेन्द्र पाल सिंह जी
चेयरमैन, यू.जी.सी., बहादुरशाह जफर मार्ग
आई.टी.ओ., नई दिल्ली-110002

विषय :- यू.जी.सी. द्वारा 19वीं एवं 20वीं शताब्दी के दार्शनिकों में महर्षि दयानन्द सरस्वती का नाम सम्मिलित न किये जाने के सम्बन्ध में।

संदर्भ :- पत्र संख्या-सार्व. आ.प्र.सभा/21/1525 दिनांक 30 जून, 2021 का अवलोकन करने हेतु।

महोदय,

आशा है ईश कृपा से आप स्वस्थ एवं सानन्द होंगे। उपरोक्त संदर्भित पत्र तत्कालीन केन्द्रीय शिक्षा मंत्री श्री रमेश पोखरियाल निशंक जी के नाम से लिखा गया था जिसकी प्रतिलिपि आपको भी भिजवाई गई थी। जिसके माध्यम से निवेदन किया गया था कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) ने दर्शन का नया पाठ्यक्रम अपनी बैवसाईट पर कुछ समय पूर्व अपलोड किया है। इस पाठ्यक्रम की इकाई-5(V) में समकालीन 19वीं एवं 20वीं शताब्दी के दार्शनिकों के जो नाम अपलोड किये गये हैं उनमें स्वामी विवेकानन्द, श्री अरविन्द, महात्मा गांधी सहित 15 लोगों के नाम लिखे गये हैं जिनमें स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का नाम नहीं है। जबकि वे समकालीन भारतीय दर्शन के शिखर पुरुष थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश एवं वेद भाष्य जैसी रचनाओं के द्वारा अपनी उच्च दार्शनिकता एवं पाण्डित्य का परिचय दिया हुआ है। उसके बावजूद समकालीन दार्शनिकों की सूची में उनका नाम सम्मिलित न करना हास्यास्पद एवं कष्टदायक है। जबकि सर्वविदित है कि जिन दार्शनिकों के नाम इस सूची में अपलोड किये गये हैं, इनमें से अधिकांश पर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का विशेष प्रभाव रहा है। विशेष रूप से योगी अरविन्द का नाम उल्लेखनीय है जिन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती को समस्त दार्शनिकों एवं योगियों में हिमालय के समान सबसे ऊँचे स्थान पर प्रतिष्ठित किया है, किन्तु यू.जी.सी. द्वारा अपलोड की गई सूची में स्वामी दयानन्द जी का नाम न होने के पीछे क्या मानसिकता काम कर रही है, यह हमें समझ नहीं आया।

यू.जी.सी. को पूर्व में भेजे गये संदर्भित पत्र का जवाब अभी तक नहीं आया है। इस पत्र के माध्यम से आपको स्मरण कराना चाहते हैं कि उपरोक्त संदर्भित पत्र जो केन्द्रीय शिक्षा मंत्री के नाम से लिखा गया था और उसकी प्रतिलिपि आपको भी भेजी गई थी उस पर की गई कार्यवाही से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को शीघ्र अवगत कराने का कष्ट करें। मुझे आशा है कि आप इस सम्बन्ध में की गई कार्यवाही से शीघ्र अवगत करायेंगे।

सधन्यवाद,
संलग्नक :- संदर्भित पूर्व पत्र की कापी।

भवदीय

(स्वामी आर्यवेश)
सभा प्रधान

दूरभाष : 011-23274771, 23260985, टेलीफैक्स : 011-23274216
ई–मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in
वैबसाईट : www.vedicaryasamaj.com

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com

Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का उत्तर प्रदेश का एक दिवसीय तूफानी दौरा

20 जुलाई, 2021 को सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने उत्तर प्रदेश के हाथरस जिले का एक दिवसीय तूफानी दौरा किया। उनके साथ क्रांतिकारी संन्यासी एवं मिशन आर्यावर्त के निदेशक स्वामी आदित्यवेश, स्वामी ब्रह्मानन्द जी, ब्र. रामफल आर्य तथा श्री धर्मेन्द्र कुमार भी रहे। स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक से स्वामी आर्यवेश जी तथा उनके सहयोगी ग्राम सोनई जिला मथुरा में स्वामी जी की देखरेख में संचालित द्रौपदी देवी जिज्ञासु विद्यालय पहुँचे तथा वहाँ पूरे विद्यालय का निरीक्षण किया। उन्होंने कोरोना के कारण से बन्द पड़े शिक्षण कार्य, आर्य समाज की निष्क्रियता की चर्चा उपस्थित कार्यकर्ताओं से की तथा प्रधानाचार्य श्री चन्द्रमोहन रावत को विशेष निर्देश दिये। विदित हो कि यह विद्यालय आर्य समाज के विख्यात विद्वान् स्व. आचार्य धर्मजित जिज्ञासु की धर्मपत्नी श्रीमती द्रौपदी देवी जी की स्मृति में उनके सुपुत्र व सुपुत्रियाँ अपने सहयोग से चला रही हैं। स्वामी आर्यवेश जी, आचार्य वागीश जी एटा, डॉ. पवित्रा विद्यालंकार प्राचार्या कन्या गुरुकुल सासनी आदि को उन्होंने प्रबन्ध एवं देखरेख का दायित्व प्रदान किया हुआ है। श्री धर्मजित जिज्ञासु का सोनई पैतृक गांव है। अतः उनकी सुपुत्री प्रसिद्ध विदुषी डॉ. देवबाला, डॉ. स्नेहबाला, डॉ. नरेन्द्र धर्मजित, श्री हरिश्चन्द्र शर्मा आदि विशेष रूप से इस विद्यालय को चलाने के लिए कृत–संकल्पित हैं। आचार्य धर्मजित जिज्ञासु ने सन् 1975 में अमेरिका में पहली आर्य समाज न्यूयार्क में स्थापित की थी। वे सार्वदेशिक सभा से भी लम्बे समय तक जुड़े रहे थे। उनकी सुपुत्री डॉ. देवबाला जी एक प्रसिद्ध डॉक्टर के अतिरिक्त एक ओजस्वी वक्ता एवं विचारक भी हैं।

सोनई स्कूल के निरीक्षण के पश्चात् कन्या गुरुकुल सासनी में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी और उनके सहयोगियों ने प्राचार्या पवित्रा वेदालंकार के साथ विभिन्न विषयों पर वार्ता एवं विचार–विमर्श किया। उन्होंने गुरुकुल की सुन्दर व्यवस्था के लिए प्राचार्या महोदया की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा भी की। स्वामी आर्यवेश जी ने उन्हें हर प्रकार के सहयोग का विशेष आश्वासन भी दिया।

कन्या गुरुकुल सासनी से सीधे यह टीम स्वामी ब्रह्मानन्द जी के पैतृक गांव तलवाई, हाथरस पहुँचीं और वहां पर भोजन आदि के उपरान्त कार्यकर्ताओं से मिलकर ग्राम पुसैनी (सादाबाद) हाथरस में श्री अजीत सिंह चौधरी के पूज्य पिता जी के देहावसान पर

श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए पहुंचे, वहाँ पर स्वामी जी ने पारिवारिकजनों को सांत्वना दी। श्री अजीत सिंह चौधरी, श्री धर्मेन्द्र जी के विशेष साथी हैं और उन्होंने वर्षों पहले अपनी पहलवानी का जलवा यहाँ पर दिखलाया हुआ है। सारे गांव के लोग उनसे विशेष रूप से परिचित हैं। स्वामी जी की टीम गांव के मुख्य लोगों से मिली। परिवार वाले तथा गांव के प्रतिष्ठित महानुभाव स्वामी जी से मिलकर अत्यन्त प्रसन्न हुए और स्वामी जी से आग्रह किया कि वे आज यहाँ पर रूककर ग्रामवासियों को अपने संदेश से अनुगृहीत करें, लेकिन स्वामी जी की व्यस्तता के कारण यह सम्भव नहीं हो पाया। गांव वालों ने स्वामी जी से निवेदन किया कि इस बार न सही लेकिन समय–समय पर आप हमारे गांव में पधारकर हमलोगों का मार्गदर्शन करते रहेंगे तो बहुत अच्छा लगेगा। वहाँ से सीधे टिटौली आश्रम के लिए ये पूरी टीम रवाना हुई तथा रात्रि 12.30 बजे टिटौली आश्रम पहुँचे।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान क्रांतिकारी संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी की उपस्थिति में काकड़ौली हुकमी में किया गया पौधारोपण

वृक्ष हमारे सच्चे साथी हैं। जो हमारे जीवन में हमें प्रत्येक क्षेत्र में काम आते है। यह बात स्वामी आदित्यवेश जी ने राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, काकड़ौली हुक्मी में पौधरोपण अभियान की शुरुआत करते हुए कही।

मा. हरपाल आर्य ने जानकारी देते हुए बताया कि विद्यालय में बारिश की शुरुआत के साथ ही हर वर्ष की भांति वृक्षारोपण अभियान चलाया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद हरियाणा के प्रधान स्वामी अदित्यवेश विशेष रूप से उपस्थित रहे। वृक्षारोपण अभियान के पश्चात स्वामी आदित्यवेश जी ने कहा कि वृक्षारोपण अभियान ऐसे समय में शुरू किया गया है जब महामारी के दौर में लोग ऑक्सीजन की कमी से जूझ रहे हैं तो यह प्रेरणादायी पहल है। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई ने पर्यावरण को असंतुलित कर दिया है। इस अभियान की जितनी भी सराहना की जाए कम है। पेड़–पौधों के बगैर मानव जीवन की कल्पना बेमानी होगी। हम सभी को पेड़–पौधों को बचाने व ज्यादा से ज्यादा संख्या में पौधा लगाने का संकल्प लेना चाहिए। एक वृक्ष दस पुत्रों के समान होता है। वृक्ष हमसे कुछ लिए बिना जीवनभर हमें ऑक्सीजन देते रहते हैं। यह

हमारे सच्चे मित्र है। इन्सान के जन्म से पहले वृक्षों का जन्म हुआ तब से लेकर आज तक इनके तने से लेकर जड़, शाखा और पत्तियों से हम हर पल हर दम इनका उपयोग करते रहते हैं। इसके बदले में इन्सान ने इन्हें कुछ नहीं दिया बल्कि इनका विनाश ही किया है। यह जानते हुए भी इनके बिना हमारा जीवन असंभव है।इसलिए प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है कि अपने पूरे जीवन में एक वृक्ष तो जरूर लगाएं।

हरपाल आर्य ने बताया कि ग्रामीण लाइब्रेरी बिलावल के सौजन्य से वृक्षारोपण अभियान के साथ साथ पौधा वितरण अभियान भी चलाया जाएगा। इससे पूर्व भी पिछले 5 वर्षों से ग्रामीण लाइब्रेरी बिलावल द्वारा पौधे वितरित किये जाते रहे हैं। इस अवसर पर विद्यालय प्रभारी भारती, संदीप कुमार, रविन्द्र, संजय ,सुरेन्द्रपाल, जगदीश सुखबीर, सुरेश, प्रवीण आदि उपस्थित रहे।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।